विधान को नहीं मानते, जो समाज के लिए कल्याणकारी है। वे ऋषियों के विधि-विधान का पालन नहीं करते। इसलिए उनके अनुभव से लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह है कि असुरों की सामाजिक परिस्थिति बड़ी ही दुःखमय है।

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम्।।८।।

असत्यम्=मिथ्या; **अप्रतिष्ठम्**=आश्रय से रहित; **ते**=वे; **जगत्**=जगत्; **आहुः**=कहते हैं; **अनीश्वरम्**=किसी ईश्वर के बिना; **अपरस्पर**=परस्पर स्त्री-पुरुष के संभोग से; **सम्भूतम्**=उत्पन्न; **किम् अन्यत्**=और क्या; **कामहैतुकम्**=काम ही हेतु है।

अनुवाद

वे असुर कहते हैं कि यह जगत् मिथ्या है; इसका न तो कोई आश्रय है और न ही कोई ईश्वर है। यह काम से उत्पन्न हुआ है, इसका कोई दूसरा कारण नहीं है।।८।।

तात्पर्य

आसुरी स्वभाव वाले मनुष्यों की मान्यता में जगत् मिथ्या है। इसका न तो कोई कारण है, न कार्य है, न ईश्वर है और न ही कोई प्रयोजन है—सभी कुछ मिथ्या है। वे कहते हैं कि यह ब्रह्माण्डीय सृष्टि प्रासंगिक प्राकृत क्रिया-प्रक्रिया से होती है; वे नहीं समझते कि इस जगत् का कोई ईश्वर भी है, जिसने इसकी रचना किसी उद्देश्य से की है। इस सम्बन्ध में उनका हठ है कि जगत् अपने-आप उत्पन्न हुआ है, इसलिए यह सोचने का कोई कारण नहीं कि इसके पीछे किसी ईश्वर का हाथ है। उनके लिए आत्मतत्त्व और जड़ प्रकृति में कोई भेद नहीं है, वे परम-चेतन को नहीं मानते। सब कुछ जड़-तत्त्व है और सम्पूर्ण सृष्टि मानो अविद्या का एक पुंज मात्र है। उनके अनुसार, सब कुछ शून्य ही शून्य है; अतः जो कुछ भी सृष्टि दिखती है, वह केवल हमारा दृष्टिभ्रम है। उनका पूर्वाग्रह है कि वैचित्री की सारी अभिव्यक्ति अविद्या का कार्य है। इसके लिए वे स्वप्न का उदाहरण देते हैं—जैसे स्वप्न में हम अनेक वस्तुओं की कल्पना कर लेते हैं, जिनका कोई अस्तित्त्व नहीं होता और जागने पर ज्ञात होता है कि वह सब केवल स्वप्न था। यद्यपि असुर जीवन को स्वप्न कहते हैं, परन्तु देखा जाता है कि वे इस स्वप्न का आनन्द लेने में बड़े कुशल हैं।अतः ज्ञान का अर्जन करने के स्थान पर वे अपने स्वप्नलोक में ही उत्तरोत्तर आलिप्त होते जाते हैं। उनकी मान्यता है कि जैसे स्त्री-पुरुष के संयोग से बालक का जन्म होता है, उसी प्रकार इस संसार की उत्पत्ति किसी आत्मा (आत्मतत्त्व) के बिना हुई है। जड़प्रकृति के संयोग से प्राणियों की उत्पत्ति हुई है, इसलिए आत्मा के अस्तित्त्व का तो प्रश्न ही नहीं बनता, ऐसी उनकी मान्यता है। जैसे स्वेदस्राव और मृत-देह से अपने-आप बहुत से कीटाणु निकलते हैं, वैसे ही ब्रह्माण्डीय सृष्टि के प्राकृत सम्मिश्रणों से सम्पूर्ण प्राणी-समाज निकला है। अतः अपरा प्रकृति के अतिरिक्त सृष्टि का कोई अन्य कारण नहीं है। वे भगवद्गीता में आए श्रीकृष्ण के इन वचनों पर विश्वास नहीं करते,